जयप्रकाश नारायण के नेतृत्व में बिहार आन्दोलन

डॉ० विरेन्द्र नारायण पाण्डेय
पूर्व अध्यक्ष, राजनीति विज्ञान विभाग
गंगा सिंह कॉलेज, छपरा

डॉ० शर्मिला राय
व्याख्याता
राजेन्द्र अशर्फी डिग्री कॉलेज
कटहरी बाग, छपरा

14 अप्रैल 1972 में बागियों के आत्मसमर्पण के बाद जयप्रकाश नारायण के मन में यह विचार आया कि राजनीति नहीं, लोक नीति । राजनीति में प्रशासन मुख्य है लोकनीति में स्वतन्त्रता मुख्य है । तब उन्हें यह नया मार्ग मिला लोकतंत्र की पद्धति लोकमूलक ही हो सकती है, जिसकी प्रक्रिया संचालित समाज की न होकर सहकारी समाज की होनी आवश्यक है । 1971 और 1972 के चुनावों की जो बुराईयाँ भयावह रूप में उभर कर आयी उसको दिखाते हुए जे०पी० ने 13 अगस्त 1972 के 'दिनमान' की बातचीत में कहा वे बुराईयाँ पहले भी रही है, लेकिन सीमित रूप में – उनको देखते हुए लोकतन्त्र की रक्षा के लिए अत्यन्त आवश्यक हो गया है कि चुनाव की वर्तमान पद्धति में आमूल परिवर्तन किए जाये । इसी बातचीत में उन्होंने आगे कहा – केन्द्र में सत्ता या जिस प्रकार की केन्द्रीकरण होता जा रहा है वह अवश्य ही घोर चिन्ता का विषय है । सारी सत्ता सिर्फ केन्द्रीय शासन में इकक्ठी हो रही है, ऐसा भी नहीं है । यह तो एक व्यक्ति के हाथों में केन्द्रित होती जा रही है । कांग्रेस दल चुनावों की सफलता के बावजूद एक खोखला संगठन बन गया है । केन्द्रीय मुख्यमंत्रियों का आधार लोकतान्त्रिक समर्थन न होकर प्रधानमंत्री की इच्छा मात्र बन गया है ।

ज्यप्रकाश नारायण ने नये मार्ग की तलाश के लिए युवा शक्ति को संगठिन करने का संकल्प लिया । उन्होंने 30 दिसम्बर 1973 में हुई ऑल इंडिया रेडिकल हयूमनिस्ट एसोशिएशन के कलकत्ता सम्मेलन में उद्घाटन भाषण में कहा कि दलीय प्रजातंत्र का अब हमें 26 वर्षों का अनुभव हो चुका है । आमतौर पर लोग राजनीतिक पार्टियों और प्रजातंत्र के वर्तमान स्वरूप और तौर

तरीकों से ऊब गये है । वे वोट देकर इस प्रजातंत्र में जैसे–तैसे नामामात्र का अपना रोल अदा करते है, क्योंकि उनके सामने कोई विकल्प नहीं है ।

ज्नवरी 1974 के प्रथम सप्ताह से ही जयप्रकाश नारायण ने अपना नया अभियान आरम्भ किया । वाराणसी में उन्होंने निर्दलीय छात्रों को सम्बोधित करते हुए कहा कि वे एकजुट होकर वर्तमान प्रजातान्त्रिक संस्थाओं और प्रक्रियाओं की रक्षा करें छात्र और युवा वर्ग गाँधी के ग्रामस्वरूप के सपने या सामुदायिक स्वशासन के आधार पर लोक प्रजातंत्र का विकल्प खड़ा करने में लगे, जिसमें सरकार चलने की प्रक्रियाओं में अधिक से अधिक लोगों की भागीदारी हो सके ।

बिहार में छात्र आन्दोलन आरंभ हुआ जो बाद में जन–आन्दोलन बन गया और जयप्रकाश नारायण को नेतृत्व संभालना पड़ा । पटना में जो मौन जुलूस निकला उसमें कुछ प्लेकार्ड थे जिसपर लिखा था – क्षुब्ध हृदय है, बन्द जबान, हमला चाहे जैसा होगा, हाथ हमारा नहीं उठेगा । इस अहिंसक और शान्तिपूर्ण आन्दोलन ने यह प्रमाणित कर दिया कि जयप्रकाश नारायण ने सिविलनाफरमानी की व्यवहारिकता सिद्ध कर दी । 5 जून 1968 को पटना के गाँधी मैदान में छात्रों और नागरिकों की विशाल जनसभा को संबोधित करते हुए कहा आज से यह आन्दोलन मात्र 12 माँगों तथा मंत्रिमण्डल के इस्तीके एवं विधान सभा–विसर्जन तक सीमित एक छात्र आन्दोलन ही रहा, बल्कि सम्पूर्ण क्रान्ति की सिद्धि के लिए एक जन–आन्दोलन, जनसंघर्ष बन गया दूरगामी लक्ष्य इसका संपूर्ण क्रान्ति से किंचित कम नहीं है ।[1]

सरकारी दमन तल चला पर सात्याग्राहियों की ओर से कोई अहिंसक कार्यवाही नहीं हुई । यह आन्दोलन अब तक के देश का सबसे बड़ा शान्तिपूर्ण, आन्दोलन था । यह भी कहना गलत नहीं है कि गाँधी के किसी आन्दोलन से ज्यादा अहिंसक था ।

जयप्रकाश नारायण के आन्दोलन से नई चेतना जागी और इसका प्रभाव सत्ता परिवर्तन और समाज परिवर्तन पर हुआ । उनका यह अभियान भारतीय संदर्भ में ही महत्वपूर्ण नहीं था बल्कि आगे भी कहीं अधिक व्यापक और गहन स्तर पर बीसवीं सदी के विक्षुब्ध कातर और निरिह मनुष्य का विद्रोह भी था । राजनीति के प्रपंच और इतिहास के पाशार्वक, लौहवत नियमों का

अतिक्रमण करने का प्रयास जिसके द्वारा हर व्यक्ति अपनी आत्मा के आन्तरिक नियमों का अनुसरण कर सके ।

जयप्रकाश नारायण ने इस आन्दोलन से यह प्रमाणित कर दिया कि अहिंसक क्रान्ति के द्वारा व्यवस्था परिवर्तन सर्वथा संभव है । जयप्रकाश के अनुसार सविनय अवज्ञा का सहारा लेना आन्दोलन के कार्यक्रम का अंग नहीं होता परन्तु सविनय अवज्ञा का सहारा लेने के लिए विरल अवसरो पर बाध्य होता है, जब सरकार भ्रष्टाचार तथा अन्य ऐसे गलत कार्य करने पर अड़ी रहे या जनता की तीव्र आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए छेड़े आन्दोलन पर तुल जाये, जैसा कि बिहार आन्दोलन में हुआ तो ऐसी परिस्थितियों में सविनय अवज्ञ का हथियार आजमाना अनिवार्य हो जाता है ।

सामाजिक एवं आर्थिक उत्पीड़न के ऐसे क्षेत्र हो सकते हैं जहाँ सविनय अवज्ञा करना उचित नहीं है । परन्तु सत्याग्रह छेड़ना जरूरी हो सकता है । उदाहरण के लिए आर्थिक या सामाजिक शोषण के खिलाफ और यदि सरकार उत्पीड़कों की ओर से भार दमन करने लगे, तो सत्याग्रह सविनय अवज्ञा का रूप भी ले सकता है ।

बिहार आन्दोलन के समय जयप्रकाश नारायण ने असेम्बली के फाटक पर सत्याग्रह का कार्यक्रम दिया । उन्होंने स्पष्ट कहा कि 7 तारीख से चारों गेटों पर सत्याग्रह हो । सत्याग्रह का रूप क्या हो ? पिकेटिंग का पच्चीस हो पचास हो। हम सब गेटों पर खड़े हो जाएँ – एम०एल०ए० साहब आये, मंत्री साहब आये, उनको रोकें कि आप अन्दर न जाये । जाना हो तो हमारी पीठ पर से जाइये, हम आपको जाने नहीं देंगे, असेम्बली नहीं चलने देंगे । गिरफतारियाँ होगीं, हम जेल को भर देंगे । जेल से ही स्वराज पैदा हुआ है । जेल से ही तुम्हारे अधिकार प्राप्त होंगे जनता के अधिकार प्राप्त होंगे और सच्चा स्वराज मिलेगा ।[2]

बिहार आन्दोलन के संदर्भ में जयप्रकाश नारायण ने कहा । मैं अपने गणित में एक जगत चूक गया । मैं इस भ्रम में पड़ रहा कि हमारी लोकतान्त्रिक प्रणाली में इन्द्रिरा जी हमारे शांतिमय लोकतान्त्रिक आन्दोलन को दबाने के लिए साधारण असाधारण सभी कानूनों का सहारा ले

सकती है, पर वे स्वयं लोकतन्त्र को ही ध्वस्त करेगी, यह कल्पना हर्गिज नहीं थी । लोकतन्त्र में थोड़ा विरोध हुआ तो उसके बदले लोकतन्त्र का कोई गला ही दबा देगा, ऐसी मै कल्पना भी नहीं कर सकता था । यदि मुझे इस बात की कल्पना हुई होती तो आन्दोलन चलाने के लिए दूसरी कोई पद्धति अपनाने के बारे में मैंने अवश्य काफी सोच विचार किया होता ।[3]

इस तरह यह स्पष्ट है जयप्रकाश नारायण ने बिहार आन्दोलन के समय जो कार्यक्रम दिये, वे सम्पूर्ण क्रान्ति को आधार देते है, जयप्रकाश नारायण के अनुसार परिवर्तन के लिए निरन्तर आन्दोलन आवश्यक है । उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय जीवन के किसी भी क्षेत्र में क्रान्तिकारी परिवर्तन प्राप्त करना है तो आन्दोलन दबाव या संघर्ष के बिना संभव नहीं होगा । उन्होंने कहा – हाँ आन्दोलन की प्रक्रिया चलती रहे तो उस दौरान कई परिवर्तन अपने आप होंगे । बाकी परिवर्तन आन्दोलन के प्रभाव से बनाये गये लोकतान्त्रिक कानूनों द्वारा हो सकते है। लोक आन्दोलन की प्रक्रिया के चाल रहने के कारण सहज रूप से हुए परिवर्तनों को स्थायी बनाने के लिए उचित कानून बनाने की जरूरत होगी । इस तरह के कानून द्वारा अन्य तरह के परिवर्तन लाने के लिए कई तरीके अपनाने होंगे । जैसे कि विधि परिवर्तन असहयोग सविनय प्रतिकार तथा सविनय अवज्ञा । औद्योगिक क्षेत्र में उसका रूप हड़ताल या उपयोग के संचालन को अपने हाथ में लेने का हो सकता है ।[4]

जयप्रकाश नारायण ने बिहार के सभी कस्बों, शहरों में प्रदर्शनों, हड़तालों घटनों का प्रबन्ध किया । वे यह प्रयत्न करते रहे कि कहीं कोई राजनीतिक अनैतिकता हो रही हो तो उसकी ओर ध्यान आकर्षित किया जाये और सुधार दिया जाये ।

उन्होंने कहा कि इतिहास में ऐसे बहुत से उदाहरण है । समाज सोया पड़ा है, निष्प्राण लग रहा है, अचानक अंगड़ाई लेकर उठता है और सत्ता पलट देता है, सरकारे बदल देता है पद्धतियाँ बदल देता है और समाज बिलकुल परिवर्तित हो जाता है । जनता सब्र करती है । उनका मानना है कि बिहार आन्दोलन के समय ऐसी ही स्थिति उत्पन्न हो गई थी ।

जयप्रकाश नारायण ने यह स्पष्ट कहा कि उन्होंने अहिंसक क्रान्ति के लिए नया मार्ग दिखलाया है । उनका मानना है कि संपूर्ण क्रान्ति और सर्वोदय अलग नहीं है । सर्वोदय के लिए सम्पूर्ण क्रान्ति आवश्यक है । उन्होंने अहिंसा को नई क्रान्ति की रणनीति माना था ।

जो सरकार निकम्मी है, वह सरकार मिटानी है । यह नारा बिहार आन्दोलन के समय सर्वत्र गूंज रहा था । इस संदर्भ में जयप्रकाश ने इस बात का समर्थन किया कि वर्तमान बिहार सरकार निकम्मी है, इसलिए इसे जाना चाहिए । इसके लिए उन्होंने दो कार्यक्रम दिये – मन्त्रिमण्डल का इस्तीफा और विधान सभा को भंग कराना ।

इस संदर्भ में उन्होंने यह कहा कि निकम्मी सरकार को हम चलने ही न दें । जहाँ सम्भव हो और जहाँ जनता की कोई क्षति इस कार्यक्रम से न हो वहाँ हम सरकार के साथ असहयोग करें । जैसे लोग अपने झगड़े आदि, थानों या अदालतो में न ले जायें, बल्कि स्वयं पुरानी पंच पद्धति के अनुसार हल करें । इसके साथ यह भी कोशिश की जाये की सरकारी दफतरों को जो विशेषतः प्रशासनिक है, ठप्प कर दिया जाये । ब्लॉक तथा अंचल से लेकर कलक्टरी तक और बाद में आवश्यक हो तो सचिवालय तक भी । यह तो ठप्प करने का कार्यक्रम हुआ । इसके साथ–साथ चुने हुए प्रकार का असहयोग का कार्यक्रम भी चलेगा ।

उन्होंने दूसरा कार्यक्रम दिया कर नहीं देने का । उनका कहना था कि जिस सरकार को हम नहीं मानते, जिसको हम हटाना चाहते है उसको हम कर क्यों दें। इसे उन्होंने कर बन्दा का आन्दोलन कहा । उन्होंने पहले कुछ चुने हुए करों को बन्द करने का परामर्श दिया, जेसे जमीन का कर, सब प्रकार के सेस, सड़क रोस, शिक्षा सेस । उनका यह मानना था कि कर बन्दी आन्दोलन का यह परिणाम होगा कि गिरफ्तारियाँ होंगी, जमीन की, अचल सम्पत्ति की कुर्की होगी । जयप्रकाश नारायण के अनुसार यह संघर्ष केवल सीमित उद्देश्यों के लिए नहीं था । उन्होंने कहा– इसके उद्देश्यों तो बहुत दूरगामी है । भारतीय लोकतन्त्र को 'रीयल' यानी वास्तविक तथा सुदृढ़ बनाना जनता का सच्चा राज कायम करना समाज से अन्याय, शोषण आदि का अन्त करना,

एक नैतिक सांस्कृतिक तथा शैक्षणिक क्रान्ति करना, नया बिहार बनाना और अन्ततोगत्वा नया भारत बनाना । मित्रों जैसा प्रारम्भ से कह चुका हूँ , यह सम्पूर्ण क्रान्ति है – total revolution है ।[5]

बिहार आन्दोलन के समय विधानसभा से त्याग–पत्र देने के लिए उन्होंने ललकारा था और इसका सुखद परिणाम निकला । इस आन्दोलन ने आमजन को जागृत किया और परिवर्तन के लिए अपनी लड़ाई खुद लड़ने के लिए प्रेरित किया । 1977 में जो आम चुनाव जयप्रकाश नारायण के नेतृत्व में हुआ उसमें कॉग्रेस सत्ता च्यूत हो गयी ।

जयप्रकाश नारायण ने जो क्रान्ति चेतना जगायी और अहिंसा को अपनाया, उसे झुठलाया नहीं जा सकता है ं उनके इस आन्दोलन ने यह सिद्ध ही कर दिया कि अहिंसक क्रान्ति और सत्याग्रह द्वारा राजनीतिक एवं सामाजिक परिवर्तन संभव है ।

निष्कर्ष – उपर्युक्त अध्ययनों से यह पता चलता है कि जयप्रकाश नारायण एक कुशल नेता थे । उन्होंने युवाओं को जागृत करके बिहार में एक क्रान्तिकारी परिवर्तन किया । इस आन्दोलन ने उन्हें लोक नायक बनाया । पहली बार किसी राज्य में सत्ता परिवर्तन हुआ । अतः हम कह सके है कि इसी आन्दोलन से प्रेरित होकर केन्द्र में सत्ता परिवर्तन हुआ । अतः वह एक कुशल नेता थे ।

संदर्भ–सूची

1. जयप्रकाश नारायण, संपूर्ण क्रान्ति की खोज में मेरी विचार यात्रा, भाग 2, सर्व सेवा संघ, वाराणसी, 1977, पृ० 23
2. जयप्रकाश नारायण, सम्पूर्ण क्रान्ति के लिए आवाहन, सर्व सेवा संघ प्रकाशन वाराणसी, सितम्बर 1974, चौथा संस्करण
3. जयप्रकाश नारायण, सम्पूर्ण क्रान्ति की खोज में मेरी विचार यात्रा भाग–2 सर्व सेवा संघ प्रकाशन, वाराणसी, 1977, पृ० 48
4. वही
5. वही, पृ० 40–41